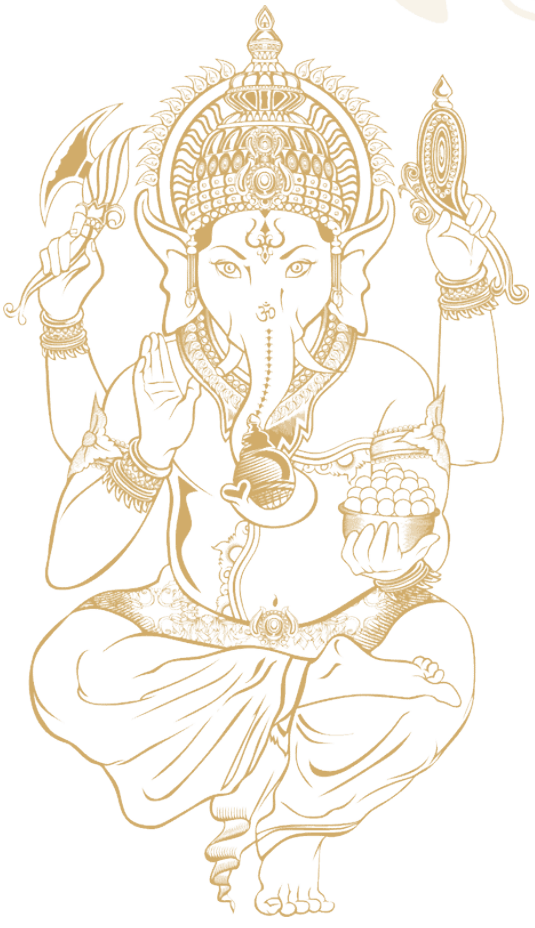

Mr.Tarun

Ms.sanjna

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120162726

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
24/01/2006	जन्म तिथि	15/10/2008
मंगलवार	दिन	बुधवार
घंटे 07:55:00	जन्म समय	18:30:00 घंटे
घटी 01:38:45	जन्म समय(घटी)	30:02:13 घटी
India	देश	India
Partabgarh	स्थान	Mandsaur
24:02:00 उत्तर	अक्षांश	24:03:00 उत्तर
74:40:00 पूर्व	रेखांश	75:10:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:31:20	स्थानिक संस्कार	-00:29:20 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:15:29	सूर्योदय	06:27:07
18:11:31	सूर्यास्त	18:02:47
23:56:29	चित्रपक्षीय अयनांश	23:58:58

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 7वर्ष 4मा 27दि		20:08:36	मक	लग्न	मेष	08:23:15	केतु 2वर्ष 8मा 22दि	
शनि		10:00:28	मक	सूर्य	कन्या	28:33:39	शुक्र	
22/06/2013		27:09:31	तुला	चंद्र	मेष	08:08:18	08/07/2011	
22/06/2032		24:47:04	मेष	मंगल	तुला	13:44:34	08/07/2031	
शनि	25/06/2016	08:07:33	मक	बुध व	कन्या	13:35:28	शुक्र	07/11/2014
बुध	05/03/2019	22:33:55	तुला	गुरु	धनु	20:42:00	सूर्य	07/11/2015
केतु	13/04/2020	24:13:59	धनु व	शुक्र	वृश्चि	02:05:58	चन्द्र	08/07/2017
शुक्र	14/06/2023	14:14:16	कर्क व	शनि	सिंह	22:56:48	मंगल	07/09/2018
सूर्य	26/05/2024	12:37:27	मीन व	राहु व	मक	22:14:53	राहु	07/09/2021
चन्द्र	25/12/2025	12:37:27	कन्या व	केतु व	कर्क	22:14:53	गुरु	08/05/2024
मंगल	03/02/2027	14:47:08	कुंभ	हर्ष व	कुंभ	25:29:13	शनि	08/07/2027
राहु	10/12/2029	22:50:52	मक	नेप व	मक	27:34:23	बुध	08/05/2030
गुरु	22/06/2032	01:44:04	धनु	प्लूटो	धनु	04:51:33	केतु	08/07/2031

लग्न-चलित

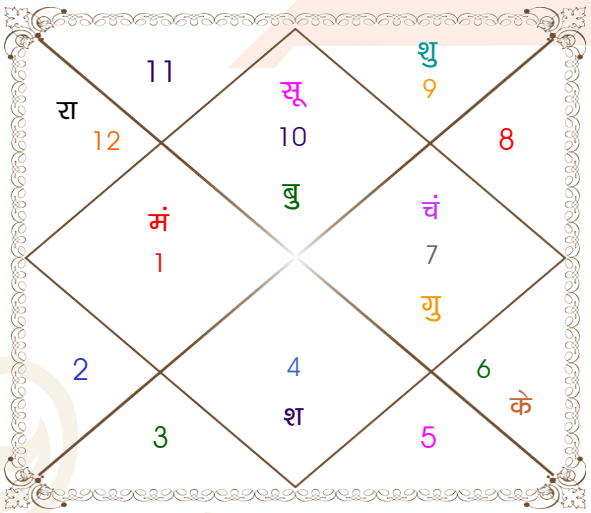

लग्न-चलित

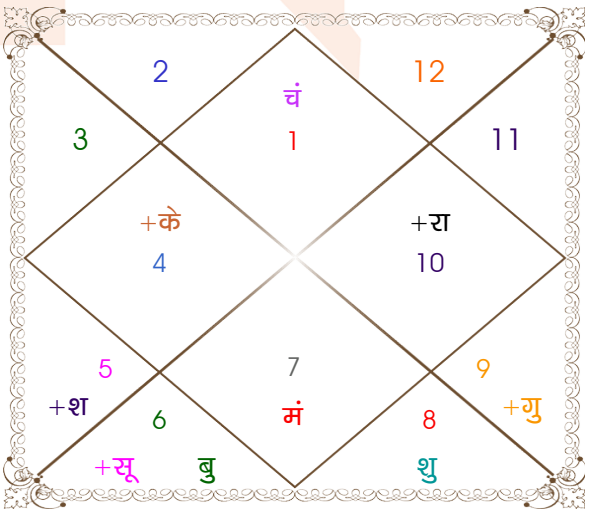

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	अश्व	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	मंगल	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	तुला	मेष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	22.50		

डतण्ज्तनद का वर्ग सर्प है तथा Ms.sanjna का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्ज्तनद और Ms.sanjna का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्ज्तनद मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है। क्योंकि मंगल डतण्ज्तनद कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल डतण्ज्तनद कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Ms.sanjna मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि डतण्ज्तनद कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डतण्ज्तनद कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्ज्तनद तथा Ms.sanjna में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।